धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अप्रैल- 2011

* अमूल्य देव वाणी
* सुख अनुरागों का बोध और उनके खौफनाक कार्य को रोकने के सच्चे उपाय
* इब्राहिम लिंकन नेता के रूप में
* जीवन की सफलता-उपयोगिता में
* भाव प्रकाश

अमूल्य देव वाणी

नीच घृणा ज़हरे कातिल है, यह आत्मा का कुछ बनने नहीं देती। तुम्हारे भीतर बरदाशत करने की इतनी ताकत आनी चाहिए कि तुम दूसरों से बुरा सलूक पाकर भी उससे फट न जाओ बल्कि उसका भी भला करना चाहो। उसके लिए सच्ची हमदर्दी का भाव पैदा हो, तब दूसरे के दिल पर असर होता है और उसमें कुछ बेहतरी का सिलसिला आरम्भ होता है, वरना लफज़ों से दूसरे की ज़िंदगी में शुभ परिवर्तन का कार्य आरम्भ नहीं होता। हम चाहते हैं कि तुम्हारे भीतर से यह नीच घृणा शक्ति नष्ट हो सके। यह फूंक मार देने या सिर्फ मुंह से कह देने से नष्ट नहीं हो सकती, बल्कि तुम्हें अपने निज के साधन में प्रतिदिन ऐसे लेखों का पाठ करना चाहिए जिनसे उसकी घृणित और महा हानिकारक छवि तुम्हारे सामने आवे। इस विषय में लिखने का साधन भी होना चाहिए।

यूं तो प्रत्येक शारीरिक रोग ही शरीर के लिए हानिकारक है, परन्तु दुर्भाग्य से यदि किसी को कोढ़ का महा रोग हो जाए, तो उस अभागे जन की बहुत ही कृपापात्र अवस्था है। यह महा कोढ़ एक एक जन के शारीरिक अंगों पर आक्रमण करके उन्हें गला गला कर झाड़ना आरम्भ करता है। धीरे धीरे उसके सब अंग गल गल कर झड़ना आरम्भ करते हैं और बहुत वर्षो तक महा भयानक दुःखों में से गुज़र कर वह जन मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उसके पास से बड़ी भारी सडांद आती है। कोई जन ऐसे कोढ़ी के पास चन्द मिन्ट खड़ा होना भी गवारा नहीं करता। उसके ताल्लुक में आने वाले जनों को भी इस महा कोढ़ के रोग के लग जाने का अंदेशा होता है। इस महा हानि से औरों को बचाने के निमित कई दयालु हृदय रखने वालों ने इस महा रोग के रोगी जनों के लिए नाना स्थानों में अलग हस्पताल खोल दिए हैं, जहां पर उनकी बाकायदा तौर से शुश्रूषा की जाती है और अन्य जन महा हानि उठाने से बच जाते हैं।

ठीक इसी प्रकार से ही यूं तो सब नीच अनुराग और घृणा आत्मा के लिए हारिकारक हैं परन्तु जो नीच अनुराग आत्मिक कोढ़ का काम करता है, वह अंह का महा हारिकारक रोग है। उससे उत्पन्न घंमड और नीच घृणा सचमुच ही एक एक कोढ़ी की न्यांई उसके आत्मिक उच्च अंगों को झुलसाने का काम करते रहते हैं। ऐसा अभागा जन औरों के सच्चे या झूठे अवगुणों का औरों के पास प्रकाश करके विष खाने और औरों के भीतर भी विष संचार करने का काम करता रहता है।

देवात्मा

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 4

अप्रैल – 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नीच सुख पागल बनाते हैं।

परम पूजनीय भगवान देसात्मा ने फरमाया है कि "मनुष्य सब पागल हैं, जो पागलखाने में बन्द हैं, वह अधिक पागल हैं, दूसरे कुछ कम पागल हैं। पागल कौन? पागल वह जिसको अपने शरीर के भले बुरे, खुराक, गन्दगी की कोई सुध न हो। अपने नंगे-पन का, ढके होने की कोई तमीज़ न हो, सोने , मिट्टी के मूल्य का कोई बोध न हो। ऐसी बेसुधि का नाम ही पागलपन है।

प्रत्येक मनुष्य सुख अनुरागी है। सुख परायण है। सुख लालसाओं की गुलामी से कोई बचा हुआ नहीं। यही सुख अनुराग मनुष्य के हृदय में अन्धेरा पैदा करते हैं। सुख अनुरागों के पैदा किए हुए हार्दिक अन्धेरे में मनुष्य के अस्तित्व के लिए जो अमूल्य सचाई है, सुख अनुराग उसे देखने नहीं देते। न केवल देखने ही नहीं देते, वह अनावश्यक और निरर्थक दिखाते हैं। सुख को ही आवश्यक दिखाते हैं। हां, हानिकारक को लाभदायक दिखाते हैं, महा घाटे के सौदे को नफे ही नफे का सौदा दिखाते हैं। इस उल्टी दृष्टि का नाम ही पागलपन है।

शारीरिक सुखों के अनुराग मनुष्य को पागल बनाते हैं, वह खाने पीने को, कपड़े वा लिबास के फैशन को, सवारी कार आदि को एयर कंडीशनरज़ आदि सब चीजों को अति आवश्यक वा लाभदायक दिखाते हैं।

किसी स्त्री का अपने लिए 10,000 साड़ीयां इक्टठे करने में लगे रहना, यह एक पागलपन है, शारीरिक सुखों के अति अधिक सामानों के प्रति आकर्षण, मनुष्य को पागल बनाए रखता है। उसको प्राकृतिक जीवन और स्वास्थ्यकारी नियमों से गुमराह करता है। सुख का अधिकार अधिक और सेहत का कम होता जाता है। सुख का प्यार बिमारियों से समझौते का जीवन बना देता है।

नशे का अनुराग तो मनुष्य को दुखों और तबाही के सौदे को सच्ची ऐश बहार दिखाता है। जीवन की जीत और सफलता दिखाता है। लाखों ग़ालिब, बटालवी, सहगल और मीना कुमारियां फटे हाल, बेबस, रुल रुल कर और बेआबरू होकर असमय कूच करते हैं। नशे के सुख अनुरागी को नशे के लिए बिक जाने में महानता दिखाई देती है।

धन, धरती और पदार्थों का मोह मनुष्य को अपना गुलाम बनाए बैठा है, यह शरीफ और नेकों का कोढ़ है। धन की चाट के अधीन भूख और तरह तरह के दुख ही स्वीकार्य हो जाते हैं। सेहत का मूल्य, निकटी सम्बन्धियों का मूल्य, नेकी, बदी, मान, सम्मान का मूल्य सब गिर जाते हैं। एक ही मूल्य रह जाता है। धन, धरती और पदार्थ धनवान के लिए धन ही देवता है और धनवान ही मित्र बन जाते हैं। भले बुरे की

पहचान ख़त्म हो जाती है। जीवन का कोई और उच्च लक्ष्य भी हो सकता है, इसकी कोई सोच नहीं रहती। धन इक्ट्ठा करना, इसे देख देख कर खुश होना, दूसरों के पास धन की ही शेखी बघारना और अपनी निठल्ली, अपमान करने वाली, स्वेच्छाचारी सन्तान को सौंप जाना ही लक्ष्य बन जाता है। आख़िर इस धन का वियोग सहना पड़ता है, धन अपने इश्क के सरूर में अपनी जुदाई से होने वाली असहाय तड़पन तक की चट्टान जैसी सचाई को आंखों से ओझल किए रखता है। इश्कों में हंसना, परन्तु उसके साथ सम्बधित रोने को देखने नहीं देता। सब प्रकार के सुखों के इश्कों का हितकर ब्रेकों से ईट कुत्ते वाली दुश्मनी है। नीच इश्क सब ब्रेकें फेल किए रखते हैं। धन का इश्क जीवन, स्वास्थय, विद्या, परोपकार का मूल्य देखने नहीं देता। जेबें रूपयों से भरी रखकर भी कई बार धन अनुरागी ठीक खा पी नहीं सकता, इलाज वा विद्या ग्रहण नहीं कर सकता। अपने हाथ से धन खर्च करने की सामर्थ्य खो बैठता है।

मान, सम्मान बड़प्पन, बड़ाई की लालसा में अथाह आकर्षण है। मनुष्य के यह सुख भला बुरा देखने नहीं देते। बहुत सारे भले काम भी भले के लिए नहीं किए जाते, वह केवल मान सम्मान के लिए किए जाते हैं। दान, पुण्य, स्कूलों, कालिजों और हस्पतालों को चन्दे अधिकतर मान सम्मान ही दिलाता है। एक बड़ा सरदार अपने सम्बन्धियों को बारात की गिनती बताने के लिए सरसों की मुट्ठी भरकर बताते थे, इसका अर्थ था कि जैसे सरसों के दानों की गिनती नहीं, उसी प्रकार जितनी चाहो बारात ले आओ। 7 दिन तक बारात आती रही और आ आकर लोग खाते रहे और वापिस जाते रहे। इस प्रकार मान बड़ाई का अनुराग मनुष्य को दिवालिया बना देता है। एक एक जन अपनी बेटी की शादी में अपनी हैसियत से अधिक कर्ज़ा ले लेता है और चुका न सकने के कारण आत्म-हत्या तक कर लेता है। पदों की मैंबरी की, प्रभुत्व की, दिखावे की इच्छा के पीछे यही सुख काम करता है। बड़ाई की भूख उच्च असूलों की अज़मत और कीमत नहीं पड़ने देती। बड़ाई के दिवाने सारी सारी उमर सोफी अर्थात नशा न करके, बड़े बनने की ख़ातिर नशे करने लग जाते हैं, राग रंग नाच गानों की महफिलों के आदी बन जाते हैं, इस प्रकार अपना और अपनी नसलों का नाश कर लेते हैं। उन्हें इसमें कोई हानि नज़र नहीं आती। वह आधुनिकता की मोहर लगवा कर बहुत खुश होते हैं।

किसी भी नीच सुख का बन्धन बढ़ा लो, अक्ल का मारे जाना आवश्यक है। वहां भले बुरे का, महान और नीच का, शिष्ट और अशिष्ट का, कठोर और कोमल का, दीन और दंभ का अर्थ रहित होना भी आवश्यक है। सुख लालसा का पासंग, किसी भी बात को माप तोल सकने की योग्यता धीरे धीरे खो देता है। इसके साथ कोई हानि, कोई घाटा और कोई दोष दिखाई नहीं देता। अदना सुखों की लालसा का ज़ोरदार प्यार, जीवन की परम सुन्दर और हितकर सचाईयां देखने के पक्ष में मनुष्य को अन्धा कर देती हैं। वह जीवन की बहुमूल्य सचाईयों को देखने की सामर्थ्य ही खो बैठते हैं और उन सचाईयों से लाभ उठाने की योग्यता भी समाप्त हो जाती है।

मनुष्य के भले बुरे को लेकर जो सुन्दर सत्य है, वह उसके सामने चमकते नहीं। उसको वह साधारण दिखाई देते हैं। मनुष्य अपने भले बुरे के प्रति बेफिकर रहता है। ऐसा रहकर वह अपनी हस्ती की रक्षा और विकास की ओर से लापरवाह रहता है। वह पागल ही तो है। मान्सिक नहीं, तो अध्यात्मिक पागल अवश्य है।

जो अपने भले बुरे को लेकर, अपनी हस्ती की रक्षा और विकास को लेकर कोई कीमती अध्ययन नहीं करता, उस अध्ययन का कोई टाईम टेबल नहीं रखता, उस अध्ययन के लिए ज़रूरी और परम हितकर पुस्तकें नहीं रखता, वह पागल ही तो है।

जो बुरी संगत, धन, धरती पदार्थों, मान पदवियों, मोह माया के लोभियों, सांसारिक चतुराईयां करने वालों, कलबों, तंबोलों की सदा संगत करता है, उन्हीं में घी खिचड़ी बना रहता है, वहीं खुशीयां मना कर तृप्ति पाता है, उसे भले और महान जनों की संगत का ख्याल वा ज़रूरत कभी अनुभव तक नहीं होती, वह पागल ही तो है।

जो बुरी संगत से भाग जाना नहीं चाहता, लोक लाज, मान मर्यादा के बन्धन तोड़कर कोई भला काम नहीं कर सकता, वह पागल ही है जो अपने भले के द्वार खोलने का प्रयत्न ही नहीं करता।

जिसके पास दूसरों के काम आने का कोई समय नहीं, जो अपने ही सुख स्वादों में मस्त है, दूसरों से सेवा, सम्मान पाना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझता है, वह जीवन बर्बाद करता है, यह पागलपन ही तो है।

सुख अनुराग मनुष्य को महान जीवन देखने नहीं देते, उसे अपना आप सबसे अच्छा लगता है, अपना कोई दोष दिखाई नहीं देता, यह पागलपन की बड़ी निशानी है।

सुखों के बन्धन मनुष्य का अपनी तरफ ध्यान ही ले जाने नहीं देते। मनुष्य होना और दोषी होना, मनुष्य होना और हीन होना, नीच होना सब समानार्थी शब्द हैं। अदना सुखों के अधिकार के कारण उसका ध्यान अपनी तरफ नहीं जा सकता, अपने दोषों के विरूद्ध वह सुन नहीं सकता। वह अपना कोई संशोधन नहीं कर सकता, संशोधन की ज़रूरत भी अनुभव नहीं करता, यह पागलपन है।

जिसको अपने उपकारी दिखाई नहीं देते, जबकि उपकारों की वर्षा के बिना न कोई जन्म ले सकता है और न उसकी पालना हो सकती है, न जीवन उन्नत हो सकता, परन्तु अपने स्वार्थ में अन्धा मनुष्य उपकारियों को शत्रु के रूप में देखने लगता है। उनका अपमान करता है और खुश होता है, उनको हानि पहुंचाने के लिए उतावला रहता है, यह अध्यात्मिक पागलपन ही है।

परन्तु पागल होकर भी मनुष्य अपने पागलपन को समझने और दूर करने की आवश्यकता अनुभव नहीं करता। यह भी पागलपन ही है।

जो अपनी शक्तियों के द्वारा और अपने चारों तरफ के वातावरण के प्रभावों से जो परिवर्तन आ रहा है, उसको नहीं देख सकता, देखने की कोई इच्छा या कामना तक नहीं रखता, वह निस्संदेह पागलपन की सीमा में दाख़िल हो रहा है।

जिसको अपने भीतर आ रहा परिवर्तन दिखाई नहीं देता, ज्ञान वा भावों में उच्च तबदीली न आने से कोई दुख नहीं होता, बेचैनी अनुभव नहीं होती, अपनी कीमती पूंजी को लूटते हुए नीच भावों के डाकू महसूस नहीं होते, या ऐसा कोई एहसास पैदा नहीं होता, वह मनुष्य बहुत लुट चुका है, उसको फिर होश आनी ही कठिन है।

काश! सुखों की खुमारी से किसी उच्च नियम को पूरे करके हम जाग सकें और इस भयानक पागलपन को देख सकें। इस सम्बन्ध में फिकरमन्द हो सकें। इसी में हमारी खैर है।

बलदेव सिंह

सुख अनुरागों का बोध और उनके खौफनाक कार्य को रोकने के सच्चे उपाय

मैंने नेचर में एक विचित्र नियम देखा है और उसका विचित्र ही कार्य देखा है। मैं एक बार सोलन में सैर के लिए जा रहा था, मैं उस वर्ष सोलन का नया यात्री था। इसलिए मेरे साथ एक वाकिफ जन को भेजा गया, कि इनको सैर कराकर लाओ। चलते चलते वह मेरा साथी एक जगह ठहर गया, मुझे कहने लगा, कि यह पौधा देखें इसका नाम बिच्छू कण्डा है। इसको हाथ लगाने से सारे जिस्म में खारिश हो जाती है। अगर कोई जन इसको गलती से हाथ लगा दे तो, उसके लिए आफत आ जाएगी, मैंने पूछा कि इस का कोई इलाज है? उन्होंने तत्काल कह दिया कि दूसरा पौधा भी देखें उसको यहां के आदमी भंग का पौधा भी कहते हैं। इस पौधे के पत्ते उसी जगह मलने से जहां बिच्छूकण्डा लग जाये तो खुजली तत्काल बन्द हो जाएगी। मैंने उस को कहा कि मैं तो इसकी परीक्षा करूंगा, उन्होंने कहा कि करके देखें, मैंने बिच्छूकण्डे को हाथ लगाया और हाथ में बहुत जलन पैदा हो गई, फिर तत्काल ही मैंने भंग के पत्तों को लेकर हाथ पर रगड़ दिया, जिससे जलन फौरन बन्द हो गई। इस पर मेरे साथी ने कहा कि जहां विनाश का कार्य है, वहां विकास का भी कार्य है। प्रत्येक रोग का इलाज भी नेचर के भीतर है। मनुष्य को तलाश करने की तकलीफ ज़रूर उठानी होगी।

नेचर के इस छोटे से दृष्टान्त से मेरे सामने एक दुनियां खुल गई। मुझे एक और साथी ने एक बात बताई थी कि एक तालाब में बहुत सारे सांप रहते थे, उसके चारों तरफ रहने वाले जन तालाब से दूर ही रहते थे। उस तालाब के निकट एक अच्छा दरखत खड़ा था, एक बार गांव वालों ने देखा कि एक जन इस दरखत के नीचे बंसरी बजा रहा है। गांव वालों ने कहा कि बंसरी बजाना बन्द करो, वरना तालाब से सांप आकर तुमको डस कर मार देंगे। बंसरी बजाने वाले ने कहा कि मैं सांपों से नहीं डरता। यह विचित्र दरखत मेरी रक्षा कर लेगा। इस दरखत की यह विशेषता है, कि अगर उसके एक दो पत्ते रगड़ कर पी ले, तो सांप का कैसा ही ज़हर हो, वह उसके ज़हर को ज़ायल कर देगा। उसने यह भी कहा, कि इस दरखत के साये से भी सांप डरेंगे, क्योंकि चारों तरफ सांपों का खतरा बहुत था, इसलिए देहाती लोगों ने इस दरखतर के पत्ते, शाखें यहां तक कि कई मोटे तने काट कर रख लिए।

इस के बाद तो मेरे सामने कई घटनाएं आ गई कि जहां विनाश का कार्य है वहां उसका इलाज भी है। आज निमोनियां का ऐसा इलाज मालूम हुआ है, और डाक्टरों का यह कहना कि 90 फीसदी आदमी शर्तिया बच जाते हैं। जब कि चन्द साल पहले निमोनियां रोग सख्त खतरनाक समझा जाता था। हैज़े की बीमारी को रोकने के लिए, टाईफाईड की बीमारी को रोकने के लिए और कई अन्य बीमारियों को रोकने के लिए इस कदर इन्जैक्शन्ज तैयार किए गए हैं कि जिसने 100

फीसदी बीमार सेहत मन्द हो जाते हैं।

आया यह सच नहीं कि सती होने की जो खौफनाक प्रथा थी, उसका आखरी खातमा करने के लिए राजा राम मोहन राय जैसे महान पुरूष और लार्ड विलियम बैंटिंक जैसे हमदर्द वाएसराए पैदा हो गए, जिन्होंने इस भयानक प्रथा को बन्द करने का कानून पास करा दिया। चाहे कुसंस्कारग्रस्त लाखों हिन्दू दांत पीसते रहे कि इस प्रथा के विरुद्ध कोई कानून पास न किया जाये। जहां नेचर में जुल्म है, वहां नेचर में ही जुल्म के रोकने का प्रबन्ध भी है। चाहे मूर्ख जन इससे अज्ञानी रहें। नेचर में उन्नति का मार्ग ही बन्द हो जाता, अगर विनाश के रोकने का कार्य न होता। दया दर्द का दारू है। विधवाओं पर जुल्म होता था, वह दर्द भरी आहों से पुकारती थी। उन दर्द भरी आहों ने दयावान पुरूष उत्पन्न कर दिए। बंगाल में महात्मा विद्या सागर और पंजाब में सर गंगाराम पैदा हो गए। इसी तरह अछूतों की दर्दनाक पुकार कईयों ने सुनी और महात्मा गांधी ने तो इनका दर्द मिटाना अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। अमेरिका में करोड़ों गुलामों पर जुल्म होता था। कई दयावान जनों ने आवाज उठाई थी। थ्यूडर पार्क और इब्राहिम लिंकन ने तो गुलागों पर से जुल्म को मिटाने का अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

नेचर का यह बहुत बड़ा नियम है कि अन्याय के नष्ट करने के लिए नेचर में प्रबन्ध मौजूद हैं। बुराई के बड़े बड़े जत्थों के नष्ट करने के लिए नेचर में प्रबन्ध है। झूठ, फरेब और कपटता को नष्ट करने के लिए नेचर में प्रबन्ध है। और यही कारण है कि इन्सानी जमायत के अन्दर से बड़े बड़े जुल्म दूर हो गए, बड़े बड़े अत्याचार दूर हो गए। वहशियाना सज़ाओं में कमी आ गई, डण्डे के राज्य के मुकाबले में नियम का राज्य आ गया। और दुनियां के सामने यह लक्ष्य चमकने लगा कि कोई ऐसा उद्धारकर्ता उत्पन्न हो, कि जो हमें प्रति दिन के बर्ताव में जीवन का हुनर बताए और सिखाए कि हम एक दूसरे के प्रति सद्भाव रख सकें, स्नेह भाव रख सकें। और एक दूसरे के सम्बन्ध को उसी तरह अनुभव करें, कि जिस प्रकार हम अपना सम्बन्ध अपने हाथों, पांवों और आंखों के साथ अनुभव करते हैं। अर्थात् न केवल हम एक दूसरे की हानि करने से रुक जायें, किन्तु एक दूसरे के सुख में खुशी अनुभव करें। एक दूसरे की भलाई में तृप्ति लाभ करें। एक दूसरे के बढ़ते हुए सौभाग्य में खुशियां मनाएं।

शोक समाचार

अत्यन्त शोक और दुख है कि देव धर्म के श्रद्धालु समराला निवासी सरदार नायब सिंह जी का असमय, अचानक एक अप्रेशन के दौरान 21 मार्च की रात को देहान्त हो गया है। हम देह त्यागी की आत्मा की रक्षा और शान्ति की कामना करते है, सन्तप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति मिलने की कामना करते हैं। उनका फोन॰ 8427366428 है।

बलदेव सिंह

इब्राहिम लिंकन नेता के रूप में

किसी देश, संस्था और समाज को चलाना, उन्नत करना किसी एक आदमी का काम नहीं होता, यह सत्य है परन्तु फिर भी रहनुमाई के लिए कोई आगे आता है जिसे हम आम शब्दों में नेता कहते हैं। उसमें कुछ विशेषताओं का होना आवश्यक है। परन्तु नेता अवश्य बहु-पक्षीय योग्यताएं रखने वाला होना चाहिए। उसके भीतर समझने सोचने की उच्चतम योग्यता हो, उसमें दूसरों के पक्ष को समझने की क्षमता हो, विरोधियों की बात को भी वह पूरी सहनशीलता से सुन सकता हो, उस पर विचार कर सकता हो, और निष्पक्ष होकर उसमें से अच्छे सुझावों को मानने में अपना अहं आड़े न आने देता हो। दूसरों की योग्यताओं को पहचानने की योग्यता हो उसको वही क्षेत्र देकर उस योग्यता का पूरा लाभ उठा सकता हो। योग्यता रखने वाले जन किसी क्षेत्र में उसके विरोधी भी हों तो भी वह परवाह न करता हो। वह चापलूसों की चापलूसी को समझने की क्षमता रखता हो। वह स्वार्थी लोगों के जमघट में घिरा न रहता हो। उसके सामने अपने क्षेत्र, चाहे वह देश है, चाहे समाज और चाहे कोई संस्था, उस को आगे बढ़ाने का लक्ष्य साफ हो और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह सिरतोड़ मेहनत कर सकता हो। वह हितकर फैसले लेने में उस क्षेत्र के अनुभवी जनों की सलाह ले सकता हो, और उसके बाद स्वयं सही फैसला लेने का हौसला रखता हो। वह पक्षपाती न हो जिससे कि उसके पक्ष के जन उसे अपनी मनमर्जी से चला सकें। अपने सुख, स्वार्थ, पद, मान प्रशंसा आदि की अपेक्षा देश, समाज और संस्था को मुख्य समझता हो। किसी का दोष मुलायम और नरम शब्दों में उसको साफ कह सकने की हिम्मत रखता हो।

यदि किसी नेता में उपरोक्त गुण हैं, तो सही अर्थो में वह नेता कहलाने के योग्य है और उसकी रहनुमाई में देश, समाज वा संस्था उन्नति का मुंह देख सकती है।

इब्राहिम लिंकन एक ऐसे ही उच्च कोटि के नेता थे। वह अपनी असाधारण योग्यताओं के कारण बहुत मामूली हालातों से उठकर अमरीका के राष्ट्रपति बने। उनमें नेता होने के मानो सब गुण विद्यमान थे। इसीलिए राष्ट्रपति बिल कलिंटन उनके जीवन की कथा को हर रोज़ उसी प्रकार अध्ययन करते रहे हैं जैसे कोई जन धार्मिक ग्रन्थ पढ़ता है और उन्होंने स्पष्ट फरमाया हैं कि इब्राहिम लिंकन का जीवन मेरे लिए प्रेरणा ही नहीं, मेरा रहनुमा है। लिंकन में जहां प्रबन्ध की असाधारण योग्यता थी, वहां पर सात्विकता भी बहुत गहराई में थी। सात्विकता वा उच्च गुणों के न होने से उच्च कोटि की योग्यताएं हिटलर जैसे तानाशाह पैदा करती हैं। इसलिए उच्च कोटि के नेता में प्रबन्ध की योग्यताओं के साथ उच्च गुणों का होना आवश्यक है। लिंकन ऐसे सौभाग्यशाली थे कि नेचर ने उनको दिल और दिमाग़ की असाधारण योग्यताएं दी थीं, वैसा नेता आज तक अमरीका भी फिर पैदा नहीं कर सका।

लिंकन की जीवनी पर अनेकों किताबें लिखी गई हैं, उनके जीवन के एक एक पक्ष को लेकर मोटी मोटी पुस्तकें हैं। मैने उनके आरम्भिक जीवन के बारे में भी पढ़ा है, उनके विवाहित जीवन के विषय में भी और उनके राष्ट्रपति बनने तक के

संघर्ष के विषय में भी पढ़ा है, इन सारी पुस्तकों ने मेरे ऊपर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है। परन्तु पिछले दिनों मुझे उनके प्रबन्ध कर्ता या नेता रूप को एक पुस्तक में पढ़ने का अवसर मिला, जिससे मैं उनके आगे बार बार नतमस्तक होती थी, और मैंने उनसे बहुत प्रेरणाएं हासिल कीं और उनके अनुसार क्रियात्मक रूप में चलने का भी प्रयत्न किया। चन्द उदाहरण और उनके कहे हुए चन्द शब्द नीचे दे रही हूं, ताकि हम एक ओर उनकी महानता के आगे झुक सकें और दूसरी ओर उनसे उच्च प्रेरणाएं ले सकें।

लिंकन को अपने देश की रक्षा करने और गुलामी से अमरीका के कुछ भाग को आज़ाद करवाने के लिए बहुत से युद्ध करने पड़े। वे बहुत सोच विचार कर सेनापतियों की नियुक्ति करते थे। एक सीरियर जन जो लिंकन का बहुत बड़ा आलोचक था, उनका कई तरह से मजाक उड़ाता था और उनके लिए साधारण सन्मान भी नहीं दिखाता था, उसको उन्होंने सेनापति नियुक्त कर दिया। देखने सुनने वालों को बड़ी हैरानी हुई परन्तु लिंकन ने यह कहा कि अपने देश के हित के सामने मैं अपनी ego (अंह) को कोई महत्व नहीं देता। वह उस जरनैल की योग्यताओं को पहचानते थे और समझते थे कि वह अपनी योग्यता से सेना का सही नेतृत्व कर सकता है। वह युद्ध स्थल में अपने ज़ौहर दिखा सकता है और देश का गौरव बढ़ा सकता है।

लिंकन द्वारा उसको सेनापति बना देने के बाद भी उसका रवैया लिंकन के प्रति अपमानजनक रहा। यहां तक कि उसने लिंकन के पास वाईट हाऊस में आने से इन्कार कर दिया। लिंकन स्वयं अपने एक दो अफसरों के साथ उसके घर चला गया। परन्तु फिर भी काफी देर तक वह अन्दर से उनको मिलने नहीं आया, जब आया तो लिंकन ने उसी शान्त भाव से सारी योजनाओं पर विचार विमर्श किया और वापिस आ गए। साथी जनों ने बहुत महसूस किया कि यह राष्ट्रपति की तौहीन है, लेकिन लिंकन देश के हित के आगे अपने मान सन्मान को कोई महत्व नहीं देते थे। उसके अपमान जनक व्यवहारों के बावजूद लिंकन उसके करनामों पर उसे बहुत उत्साहित करते रहे और लिंकन के इस व्यवहार ने आख़िर उसका दिल पिघला दिया ओर लिंकन के जीते जी वह उनका बहुत सम्मान करने लग गया था और लिंकन की मौत पर वह जन सबसे अधिक रोया और यह ऐतिहासिक शब्द कहे कि "Now he belongs to the ages" (अब वह युगों युगो से सम्बन्धित है)।

लिंकन को उस समय के हालात के अनुसार विधान में कुछ परिवर्तन करने पड़े, जिससे उनकी आलोचना हुई, परन्तु अपने आलोचकों को सारे हालात बताकर उन्होंने यह शानदार शब्द कहे "Was it possible to lose the nation and yet preserve the consitution. By general law life must be amputated to save a life but a life is never wisely given to save a limb."

अर्थ :- "क्या किसी विधान को कायम रखने के लिए किसी कौम को खो देना सम्भव था? साधारण नियम के अनुसार किसी ज़िन्दगी को बचाने के लिए जिन्दगी न्योछावर करनी चाहिए,

लेकिन एक अंग को बचाने के लिए ज़िन्दगी को न्यौछावर करना अक्लमन्दी नहीं।

राजनैतिक नेता होकर उन्होंने राजनीति में नैतिक मूल्यों को गंवाने नहीं दिया। बल्कि राजनीति को देश और देशवासियों की भलाई के लिए मोड़ा। उसमें स्वार्थ, पक्षपात , गुटबाजी को स्थान न देकर उच्च कीमतों ओर कद्रों को ऊँचा स्थान दिया।

एक स्थान पर वह लिखते है: -

"Divorced from ethics, leadership is reduced to management and politics to mere technique."

अर्थ: - नैतिक मूल्यों से रहित नेतृत्व एक प्रबन्ध ही रह जाता है और राजनीति केवल एक कला बन जाता है।

आज जब कि गन्दी राजनीति देश में तो क्या, स्कूलों , कालिजों, गांवों नगरों ओर यहां तक कि धार्मिक संस्थाओं में भी घुस गई है और पक्षपात, गुटबाजी, स्वार्थ ईर्ष्या द्वेष के कारण धार्मिक मूल्यों को ताक पर रख दिया गया, उसके परिणाम हम भुगत रहे हैं, वहां ऐसी शानदार सोच हमें प्रेरणा दे सकती है।

लिंकन साहिब की खुली नीति थी वह खुलकर आप जा कर लोगों को मिलते थे, इतने बड़े राष्ट्रपति होकर उन्होंने कभी मान अपमान का प्रश्न नहीं रखा, उनके दुख सुख को अनुभव करके उसी समय फैसले कर देते थे, इसीलिए अमरीका की जनता उन्हें मसीहा समझती थी।

उन्होंने बार बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि व्यक्तिगत गिले शिकवों के लिए इस छोटी सी ज़िन्दगी में कहां समय है। जो आदमी ज़िन्दगी में कुछ काम करना चाहता है। उसे छोटी छोटी बातों से ऊपर उठना पड़ेगा।

एक स्थान पर नेता के गुणों पर रोशनी डालते हुए उन्होंने लिखा है: -

"A leader should be accesible, swift and he should be able to take quick decisions, Three Principles of a good leader:-

(1) Guiding (2) Teaching (3) Directing

अर्थ: - नेता तक सब की पहुंच होनी चाहिए। वह तेज़ बुद्धि और झटपट फैसले लेने की योग्यता रखता हो। एक अच्छे नेता में तीन गुण आवश्यक है। (1) वह रहनुमाई कर सकता हो (2) दूसरों को कुछ सिखा सकता हो। (3) काम ले सकता हो।

इन गुणों के बिना कोई सफल नेता नहीं बन सकता। यह कहीं भी तजुरबा करके देखो जितने उच्च कोटि के नेता हुए हैं उनमें कम या अधिक मात्रा में यह गुण वर्तमान होंगे।

इससे भी आगे लिंकन ने बंहुत शानदार शब्द कहे हैं : -

"Stand with anybody that stands right, stand with him while he is right and part with him when he is wrong"

अर्थ : - जो ठीक हो उसके साथ खड़े हो जाओ। तब तक खड़े रहना, जब तक वह ठीक रहे और जब वह ग़ल्त हो जाए, उसका साथ छोड़ दो।

वाह! क्या शानदार शब्द हैं, यह कोई उच्च कोटि का सात्विक मनुष्य ही कह सकता है। हम तो अपने स्वार्थो, अपनी ईर्ष्या, द्वेष, पक्षपात और

बुज़दिली से लुड़क जाते हैं। ठीक बात को सौ फीसदी ठीक जानकर भी उसका साथ नहीं दे सकते। उपरोक्त कोई न कोई ज़ोरदार भाव हमारे अन्दर होता है, जो हमें ठीक बात का साथ नहीं देने देता, फिर हम धार्मिक बनने का ढोंग कर सकते हैं, सच्चे गुरू का सेवक होने, उसके लिए कुछ कर गुज़रने के झूठे नारे लगा सकते है।, परन्तु धार्मिक नहीं बन सकते। एक राजनैतिक नेता द्वारा कहे यह शब्द हमें अपने विषय में सोचने पर मजबूर करते हैं, क्योंकि वह राजनैतिक नेता सात्विक जीवन धारी थे।

मैं तो लिंकन के आगे नतमस्तक हूं, उनकी तस्वीर भी कहीं दिख जाए, तो दिल झुक जाता है। आज के युग में कहीं ऐसे नेता हमारे देश को मिल जांए, हमारी समाज को मिल जांए, यह कामना गहराई से पैदा होती है।

अब आगे उनकी सात्विकता का शिखर है, जब उन्होंने यह ऐतिहासिक शब्द कहे:-

"I shall do nothing in Malice, What I deal with is too vast for malicious dealing. There should be no feelings of hate, vindictivness and malice."

अर्थ :- "मैं दुर्भावना से कुछ नहीं करूंगा, जो कार्य मैं कर रहा हूं, उसमें दुर्भावना का कोई स्थान नहीं है। कही भी घृणा, बदला और दुर्भावना के भाव नहीं होने चाहिए।"

लिंकन साहिब! मैं आपको क्या श्रद्धा और सन्मान के फूल चढ़ा सकती हूं। हम आपके सामने इतने बौने हैं कि ऊपर आंख उठाकर देखने के भी योग्य नहीं। काश! आप जैसे शिष्य देवात्मा गुरू को मिल जाते, वह अद्वितीय देव गुरू जो अपने बड़े-शत्रुओं के प्रति यह भाव रखते थे, कि शत्रु यदि उन्हें गिरा पड़ा भी मिल जाये, तो वह पहले शख्स होगें, उनको उठाने के लिए।

यह देव वाणियां हमने अनगिनित बार पढ़ लीं, पर वही ढाक के तीन पात। यह देव वाणी बिना पढ़े ही लिंकन ने समझी है। हमने तो देवात्मा की शिक्षा का मज़ाक उड़ाया है। क्या हम विरोधी भी नहीं परन्तु अपने से मिल विचार रखने वालों के प्रति कुछ भी सहनशील नहीं हो सकते? उनके विचार आवश्यक नहीं कि विरोधिता के हों, बहुत सारे विचारों में समाज का हित शामिल होता है, परन्तु समाज का हित नहीं, हमें तो अपना हित चाहिए। ऐसे लीडर जो हर बुराई को लीपा पोती से दबा देना चाहते हों, जो अपने से योग्य जनों को बाहर फैंक देना चाहते हों, ताकि उनके स्वार्थ उनकी महत्वाकाक्षाएं पूरी होती रहें, समाज वा संस्थाओं को कहां ले जाएंगे। यदि कोई सही मायनों में लीडरशिप के गुणों को जानना वा ग्रहण करना चाहे तो इब्राहिम की यह पुस्तक Abrahim, Lincon as a leader अवश्य पढ़नी चाहिए। इससे नई रोशनी मिल सकती है, यदि हमारे भीतर अभी भी कुछ सीखने की गुजाइंश हो, यह पुस्तक पढ़कर हम शर्म से पानी पानी हो जाएंगे कि देवात्मा के सेवक और उनकी संस्थाओं के कर्ता-धर्ता बनकर हम कहां खड़े हैं।

सुरजीत बराड़

जीवन की सफलता - उपयोगिता में

दसवीं कक्षा में एक बहुत सुन्दर कविता है जिसमें लिली के छोटे से फूल की उमर एक दिन की होती है उसमें कवि ने यह समझाने का यत्न किया है कि मनुष्य के जीवन की सफलता उमर से नहीं, उसके जीवन की उपयोगिता से है।

कई जन बहुत लम्बी उमर पाकर भी सारी उमर अपने स्वार्थ से ऊपर नहीं उठते, यहां तक कि महत्वपूर्ण पद रखकर भी, जहां उन्हें बहुत उपयोगी काम करने का लम्बा समय मिलता है, वह अपने स्वार्थों की पूर्ति मे लगे रहते हैं, न केवल उस पद की गरिमा को बनाए नहीं रखते बल्कि अपने द्वारा कई प्रकार से हानिकारक सिद्ध होते हैं। इसमें साधारणत: दो बातें होती हैं एक अयोग्यता और दूसरा स्वार्थ। यह दोनों कमियां रखने वाला जन किसी बड़े से बड़े पद को प्राप्त करके भी कोई लाभदायक फल पैदा नहीं करता। यही कारण है कि जिस विभाग में ऐसे जन आ जाते हैं, लम्बा समय वहां पर रहकर भी, धीरे धीरे सारा काम ठप्प हो जाता है, कई बार तो वातावरण इतना बिगड़ जाता है, आने वाले जनों के लिए बेहद कठिनाईयां पैदा हो जाती हैं। उनकी पैदा की हुई समस्याओं को सुलझा पाना कठिन हो जाता है। हमारे देश में ऐसे जनों की भरमार है जो हर क्षेत्र में जोंक की तरह चिपटे हुए हैं। यही कारण है कि देश में उन्नति के बेशुमार साधन भी देश पतन की ओर बढ़ रहा है। घोटालों का बोलबाला है। सरकारें आती हैं चली जाती हैं, परन्तु कठिनाईयां दिन पर दिन बढ़ रही हैं। यही हालात समाजों और अन्य संस्थाओं में हैं।

फिर भी कुछ ऐसे जन अवश्य होते हैं जो थोड़ी सी ज़िन्दगी में, थोड़े कार्यकाल में अपने कारनामों की सुगन्धि बिखेर जाते हैं।

शिक्षा विभाग में कुछ वर्ष पहले एक महिला अफसर मिस दुग्गल आई, वह 2 - 3 वर्ष रहीं, परन्तु न्याय और काम की स्फूर्ति का उन्होंने एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया। उनकी याद भुलाए नहीं भूलती। वह Joint Education Secretary थीं। शिक्षा विभाग का काम सब तरह से तेज रफतार से चल पड़ा था। वह जहां भी जाऐंगी अपनी सुगन्धि बिखेरेंगी।

प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी की मृत्यु के बाद प्रधानमन्त्री बनने के लिए कई लाईन में थे। उस समय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का ऐसा व्यक्तित्व था जो विवादास्पद नहीं था। बेशक देश के आम लोग उनको अच्छी तरह से जानते भी नहीं थे।

बहुत छोटा कद, बहुत दुबला शरीर, परन्तु उसमें एक सुन्दर और बलवान हृदय था। उन्होंने थोड़े से समय में हर क्षेत्र में तहलका मचा दिया। किसानों में सुधार के लिए, फौज का मनोबल बढ़ाने के लिए, "जय जवान, जय किसान" का नारा लगाया। बहुत सहनशीलता दिखाई, परन्तु जब ज़रूरत अनुभव हुई, पाकिस्तान को नाकों चने चबा दिए। देश की अनाज की कमी को पूरा करने के लिए सारे देश में सप्ताह में एक दिन अनाज का प्रयोग न करने की ऐसी प्रेरणा दी कि लोग खुशी खुशी उनके साथ हो लिए। कद भी छोटा, शरीर कमज़ोर, छोटी उमर, प्रधान मन्त्रित्व का छोटा काल - परन्तु इस सबके साथ उन्होंने जो सुगन्धि बिखेरी, उसके सामने अब घोटालों में फंसे हमारे 80 - 80 साल के नेता, अपनी 50 - 50 वर्ष की राजनैतिक उमर रखकर भी बौने नज़र आते हैं। पहलवान उनके सामने कमज़ोर नज़र आते हैं। ऐसे जन अमर हो जाते हैं और औरों के लिए प्रेरणा - पुंज होते हैं।

सुरजीत बराड़

कल्याण सत्संग और माता पिता दिवस

पिछले लगभग तीस सालों से कल्याण में माता पिता दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष भी 24 फरवरी से 27 फरवरी दुपहिर तक विशेष सत्संग वा माता पिता दिवस मनाया गया। धर्म सम्बन्धियों को हिन्दी वा पंजाबी पत्रिकाओं द्वारा वा फोन आदि करके इस सत्संग के सम्बन्ध में सूचित किया गया। इस मन्तव्य के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी 21 फरवरी को डबवाली पहुंचे, वहां कुछ दिन का सत्संग रखा गया, वहां के लोगों को भी सत्संग के लिए प्रेरित किया। उसके बाद शाम को श्रीमान जी थराजवाला पहुंचे वहां सभाएं करवाई और अगले दिन कल्याण पहुंच गए।

इस सत्संग के लिए नगरवासी सेवकों ने साधन स्थान की सफाई वा यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध किया। विशेषकर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के साथ श्रीमान मास्टर तेज राम जी का परिवार, श्रीमान बलजीत सिंह जी, श्रीमान बूटा सिंह जी आदि बहुत सेवाकारी होते रहे। रात तक पदमपुर से डा० मन्सा सिंह जी भी पहुंच गए।

25 फरवरी सुबह से ही यात्री आने आरम्भ हो गए। देहरादून, खतौली, मेरठ, दिल्ली, चण्डीगढ़, मोगा, रणियां गंगानगर, पदमपुर, गोनियाना और गुज़रात महिमा सवाई आदि स्थानों से काफी अच्छी संख्या से यात्री पहुंचे। रात से एक सभा की गई। यात्रियों के लंगर का प्रबन्ध साधन स्थान के निकट किया गया। इसमें कई जन सेवाकारी होते रहे।

25 फरवरी को शाम को और यात्री भी पहुंच गए। चण्डीगढ़ से जगदीष जी के साथ मधू सूदन जी, जलधर जी संगरूर से सीताराम जी महिमा सवाई से और थराजवाला से परमिन्द्र जी और गुरूदीप जी आदि पहुंच गए। गोनियाना से हैडमास्टर हंस राज जी परिवार के 6 जनों को लेकर पहुंचे, इस प्रकार 100 के लगभग यात्री बाहर से पहुंचे।

सबके नाश्ते वा भोजन का उचित प्रबन्ध किया गया। रात को धर्म सम्बन्धी सबको दूध पिलाने की सेवा करते गए। यात्रियों की सुविधा का हालात अनुसार पूरा ध्यान रखा गया।

भजनों का गान श्रीमान जगदीष जी हमेशा की तरह करते रहे। यह सारा प्रोग्राम बहुत ही सफलता से सम्पन्न हुआ। बहुत अच्छा वातावरण बना। कुछ जनों ने अपनी कमियां देखने का सौभाग्य पाया। एक जन ने शराब मास से तोबा की, एक ने शराब छोड़ी। एक जन ने 1000 रु० दान दिया। सुन्दर परिशोध के लिए तैय्यार हुए। सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने करवाई।

24 फरवरी 2011 :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। लोकल सेवकों के भिन्न पदमपुर, महिमा सवाई, गोनियाना वा चण्डीगढ़ से 13-14 जन पहुंच गए थे। सभा में बताया गया कि नाम जपने को लोग धर्म समझते हैं, जबकि इससे धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं। खेती, विद्या, सेहत सब नेअमतें हैं, परन्तु नेचर में नियमों का राज है। हमारा विकास और विनाश सब नियमों पर निर्भर करता है। जन्मजात विरासत का इसमें बहुत बड़ा हाथ है। वातावरण वा संगत दूसरा मुख्य कारण है, जो हमें भले और बुरे बनाने में योग देता है। एक भद्र जन ने इस वातावरण में आकर 3000 रु०

वापिस किए। एक और जन ने हस्पताल में चोरी करने का परिशोध किया। देव समाज का वातावरण है, जहां स्त्रियों ने भी अपनी ग्ल्तियों का परिशोध किया है और सच्ची आत्मिक शुद्धि की है।

25 फरवरी 2011 सुबह 8.30 बजे:- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि मौत अटल है। हमें पता है कि हम सबने मर जाना है। परन्तु मनुष्य की चाल ढाल वा प्रोग्राम यह बताते हैं, कि उसे मौत याद नहीं। युधिष्टर से पूछा गया कि सबसे हैरानी वाली बात कौन सी है, उन्होंने बताया कि सबको पता है कि एक दिन मौत ने आना है, परन्तु हैरानी है कि यह बात किसी को याद नहीं। चिन्तनशील मनुष्यों को यह बात याद रहती है। इस दर से जुड़कर ऐसे जीवन बिताए हैं, जैसे मौत के लिए सच्ची तैय्यारी की हो।

25 फरवरी 2011 तीन बजे:- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस सभा में चण्डीगढ़, दिल्ली, यू०पी०, हरियाना, राजस्थान आदि स्थानों से 70 के लगभग जन पहुंच गए थे। इस सभा का विषय था कि धर्म क्या है? कई जनों ने अलग अलग उत्तर दिए। धर्म अच्छे बनने का नाम है, धर्म उच्च भाव पैदा करने का नाम है। फिर प्रश्न किया गया कि उच्च भाव क्या है? उत्तर में कई उच्च भावों के नाम बताए गए। परम पू० भगवान देवात्मा ने बड़ी सरल भाषा में समझाया है। कलमाड़ी वा, ए० राजा का उदाहरण देकर बताया गया कि उनके नीच भावों ने देश का बहुत बड़ा अहित किया है। देश के नाम को कलंकित किया है, उच्च भावों से दूसरों का भला होता हैं। ईमानदारी, कर्तव्य पालन, हमदर्दी आदि उच्च भाव हैं। उच्च भावों की कुछ घटनाएं बताई गई। हमारा सारा जीवन खेल भावों द्वारा ही चलता है। उच्च भावों से विकास होता है और नीच भावों से विनाश होता है।

25 फरवरी 2011 रात 8.30 बजे यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस समय तक और कई स्थानों से भी बहुत से जन पहुंच गए थे। हाल पूरा भरा हुआ था। लोकल जनों की भी अच्छी हाज़री थी। नेचर के नियम क्या हैं, क्या नेचर और परमात्मा एक ही वजूद के अलग अलग नाम हैं? नेचर के नियमों के विरूद्ध कुछ नहीं हो सकता। कहलाने वाली करामातें सब झूठ हैं। कोई ओलों को नहीं रोक सकता। कोई भुचाल वा सुनामी को नहीं रोक सकता। न्यूज़ीलैंड के शहर में क्राईस्ट के चर्च में सबसे ज़्यादा बर्बादी हुई। वह कहलाने वाले रब के घर की बर्बादी थी। हमारी बिल्डिंग गिरी, उसके नीचे दो बसें भी आ गई नेचर के अन्दर नैतिक और आत्मिक order भी है, उच्च या सात्विक भाव विकास के नियम हैं। शुक्रगुज़ारी विकास का नियम है। जितनी अधिक शुक्रगुज़ारी, उतना ही स्वार्थ घटेगा। फिर शुक्रगुज़ारी पर बोलते हुए श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी के उपकारों का वर्णन किया। श्रीमान गुरूदेव राज जी की पत्नी के हाथ ठीक करने वाले डाक्टर के उपकार थे। गुरदेव राज जी को देव प्रभावों द्वारा ही नज़र आए। उच्च परिवर्तन देव प्रभावों द्वारा ही पैदा होता है।

26 फरवरी 2011 सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सारा हाल भरा हुआ था। श्रीमान जगदीष जी ने बहुत सुन्दर भजन का गान किया। सभापति जी ने संक्षेप में विकास की कथा सुनाई। जैसे आज के युग का पत्थर युग, धात युग से गुजरता हुआ शक्तियों के युग में प्रवेश

हुआ है। आज मोबाईल, लैपटाप, इंटरनैट, फेस बुक और अन्य टैकनौलेजी द्वारा सैटलाईटों की दुनियां खुली हुई है। परन्तु इतने विकास के बावजूद मनुष्य का ध्यान अपनी ओर कम ही गया। अपने विषय में भी जो ज्ञान पाया है, वह केवल शरीर के विषय मे ही है। मनुष्य ने रफतार में भी बहुत विकास किया है। दिल्ली से अमरीका का सफर 2 घण्टे में करने की योजनाएं बन रही हैं। जिस मनुष्य को विद्या की कीमत नहीं, वह पिछड़ जाता है।

एक व्यक्ति श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी के पास कहने लगा कि मैं नोट लिए फिरता हूं, परन्तु मुझे बाज़ार मे कोई खाना नहीं देता। अपनी नीच शक्तियेां के न जानने से ही ऐसी घटनाएं होती हैं। वह आदमी इतनी नुक्ताचीनी करता था कि कोई उसे खाना नहीं देता था। इन शक्तियों का ज्ञान केवल परम पू० भगवान देवात्मा की देव ज्योति के द्वारा ही प्राप्त होता है, उनके ही देव प्रभावों द्वारा उच्च परिवर्तन पैदा होता है। इन प्रभावों में ही यह ज्ञान प्राप्त होता है। सेहित, विद्या, बुद्धि का विकास बहुत बड़ी दौलत है। आत्मा का भला क्या है, उच्च भाव आत्मा की खुराक है। आत्मा की मोक्ष और विकास भी देव प्रभावों द्वारा ही होता है। और परिवर्तनों के ईलावा श्री राजेन्द्र जी देहरादून के उच्च परविर्तन की हृदय स्पर्षिय कथा सुनाई।

26 फरवरी 2011 3 बजे सभा :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। श्रीमान जगदीष जी ने "तेरे असरों के बाहर अगर आएंगे, दिल के उच्च वलवले सब मर जाएंगे" नामक भजन का गान किया। सभा का विषय था, "देव समाज से जुड़ने की बरकतें और उससे कट जाने की महा हानियां"।

दो बड़े लाभ देव समाज से जुड़ने के हैं, मिथ्या विश्वासों से मुक्ति और पापों से मुक्ति। मिथ्या विश्वासों से मुक्ति से विज्ञान मूलक दृष्टिकोण बनता है। पापों से मुक्ति से ठोस चरित्र का निर्माण होता है। इसका अर्थ है अच्छा जीवन स्तर का प्राप्त होना। नैतिक जीवन की समझ और प्राप्ति से धर्म की दुनियां में प्रवेश होता है। सम्बन्धों में उच्च मेल का पैदा होना बहुत बड़ा लाभ है। सात्विक भावों की उच्च दुनियां में प्रवेश यह देव धर्म का बहुत बड़ा दान है। नीच भाव जो जीवन को जीवन नहीं रहने देते उनसे मुक्त होने के लिए आसाधारण वातावरण के मिलने, अपने अधिकारी स्तर तक सच्ची मुक्ति के मिलने जीवन की सच्ची होश अर्थात अपने असल वजूद आत्मा का ज्ञान और विकास के लिए अन्मोल वातावरण है। अर्थात वजूद अपने आत्मा के ज्ञान और विकास के लिए अन्मोल वातावरण है देव धर्म। दुनियवी उच्च सुखों वा सामानों की प्राप्ति भी इस दर से महान लाभ है। उच्च होश प्राप्त उच्च धर्म सम्बन्धियों की संगत और सहायता उच्चतम लाभ है देव समाज से जुड़ने का। देव धर्म की संगत से कट जाने का अर्थ है देव प्रभावों से वंचित होना। मिथ्या विश्वासों में फंसना, पापाचार में फंसकर महा हानि और महा दुखों और अन्मेल को प्राप्त होना। नीच भावों अर्थात स्वार्थ की दल दल में फंस जाना। उच्च संगत और उच्च धर्म सम्बन्धियों से महरूम होकर महा हानि और दुखों में फंसना। उच्च बोधों का मारा जाना। यह ऐसी महा हानियां हैं जो देव धर्म से कट जाने से प्राप्त होती हैं।

<u>26 फरवरी 2011, रात 8.30 बजे :-</u> यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें हाल खचाखच भरा हुआ था। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य के भले और बुरे में एक बात बहुत महत्व पूर्ण रोल अदा करती है कि उसे अपने पूर्वजों से कैसे जीनज़ प्राप्त हुए हैं। पर इसमें किसी प्रकार का चुनाव नहीं किया जा सकता। जो मिल गया सो मिल गया। मान्सिक और हार्दिक योग्यताओं और कमज़ोरियों की जो विरासत मिल गई, उस पर जीवन की बुनियाद बनती है। दूसरा बड़ा फैक्टर जो मानव जीवन में रोल प्ले करता है, वह है वातावरण। जिस वातावरण में उसका पालन होता है और उसका वास रहता है। देव धर्म ऐसा निराला वातावरण पैदा करता है कि उच्च बरकतें देने वाले अश्चर्या जनक फल पैदा होते हैं। देवात्मा के देव प्रभावों के कारज द्वारा उच्च भाव पैदा होते हैं। नीच भावों से सहज बचाव इस वातावरण का निराला फल है। सम्बन्ध तत्व और जीवन का विकास मार्ग इस वातावरण की महान देन है। इस वातावरण में पापों के विकार नज़र आते हैं और सच्चे परिशोध के साधन करके परिवारिक और सामाजिक जीवन में उच्च खुशीयों के भण्डार खुल जाते हैं। सभापति जी ने इस महान उचच वातावरण से पाई बरकतों के लिए गुरू को श्रद्धा से भरकर धन्यवाद दिया।

<u>27 फरवरी सुबह 8 बजे :-</u> यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। हाल खचाखच भरा हुआ था। देव स्तोत्र के गान के बाद श्रीमान जगदीष प्रसाद जी ने "श्रद्धा भजन माता पिता जी, श्रद्धा भाव करूं उपहार" नामक भजन का गान किया। उससे मण्डल बहुत अच्छा बन गया। फिर सभापति जी ने मनुष्य की तस्वीर पेश की कई सूरतों में मनुष्य कुत्ते का भी मुकाबला नहीं कर सकता। कुत्ते अकसर वफादार और शुक्रगुज़ार होते हैं। बेटे अकसर नाशुकरे और कृतघ्न होते हैं। आज़ादी दिवस और भी अच्छा हो सकता है, सबसे अच्छे पुत्र के लिए पुरस्कार और सब से अच्छी पुत्री के लिए पुरस्कार। फिर सभापति जी ने परम पू० भगवान देवात्मा की सम्बन्ध तत्व की व्याख्या करते हुए माता पिता के उपकारी और महान रूप का वर्णन किया। एक नाशुकरे फौजी को पिता का उपकारी रूप और अपना कृत्घन रूप दिखाकर महा पाप से बचाया। सभापति जी ने गुरू के प्रभाव पाकर अपनी मां की कुर्बानी करने वाला रूप देखा और श्रद्धा से सेवा करने की उच्च रस भरपूर घटनाएं पैदा की। सेवा करने के व्यवहार शुरू हो गए। पैर दबाने, वस्त्र धोने और अन्य सेवाओं में रस मिलने लगा। कई नाशुकरे बच्चों की नारकिय घटनाएं बताई। नेपाल नरेश और उसका परिवार शराबी बेटे ने खत्म कर दिया। एक लड़की ने पति की मदद से अपनी मां, बाप भाई भाबी, बच्चों समेत 8 परिवारिक जनों को खत्म कर दिया।

ऐसे नारकिय संसार में देव आत्मा ने सम्बन्धों को हितकर बनाने का ब्रत लिया हुआ है। नालायक बच्चों को सेवाकारी और आज्ञाकारी बनाने की मिसालें पैदा की हैं। फिर सभापति जी ने जगदीष जी को और भजन गाने को कहा, उन्होंने श्रद्धा विभोर होकर 'मां' का गीत गाया। बहुत श्रद्धा उत्पादक मण्डल बन गया। फिर सभापति जी ने भाव प्रकाश करने की प्ररेणा की। हाज़िर बेटे बेटियों ने हारों द्वारा माता पिता का अर्चन कर के पैरों पर प्रणाम किया, बड़ा सुन्दर दृष्य था।

भाव प्रकाश

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- पंडित जवाहर लाल नहरू जी ने discovery of India बहुत प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है। इसमें भररत की खूबीयां वा महिमा का ब्यान है। यदि समय मिला तो मैं एक किताब लिखूंगा Discovery of My Parents. यह 100 प्रतिशत सत्य है कि गुरू महाराज की रोशनी पाकर माता पिता का रूप नज़र आया है। मैंने मां के रूप को अन्दर से देखा है। इतना महान देखा है कि वह शब्द नहीं मिलते, जिनसे उनके रूप का ब्यान करने में मैं उनसे इन्साफ कर सकूं।

हमारे माता पिता जो हमारे लिए करते हैं, वह कोई और नहीं कर सकता, एक नौजवान मां, सुन्दर मां, अपने बच्चे को लेकर पहाड़ों पर गई हुई थी। भयानक, बर्फानी तुफान आ गया। बर्फ ज़ोर से पड़ने लगी, रात हो गई। मार्ग दिख नहीं रहा था। वह वहां गिर गई, उसको बच्चे की चिन्ता थी। आखिर थक कर गिर गई। उसने धीरे धीरे अपने शरीर के सब कपड़े उतार कर अपने बच्चे को उसमें लपेट लिया। ऊपर से बच्चे को अपनी छाती पर शाल में लपेट कर रखा। उसको बर्फ ने खत्म कर दिया परन्तु उसका बच्चा बच गया। यह कुर्बानी मां ही कर सकती है। इसके लिए विद्या, कार वा कोठी किसी चीज़ की अवश्यकता नहीं। केवल मातृत्व की अवश्यकता है। इसमें मां की ममता झलकती है।

निराले सत्गुरू ने मुझे (जो पहले नज़र नहीं आता था) माता पिता का रूप दिखा दिया। इसने मुझे सदा सदा के लिए माता पिता के चरणों में झुका दिया, जिन्हें मैं तुच्छ देखता था, पसन्द नहीं करता था।

रूस के भुचाल में 11 दिन के बाद एक मां और बालक दबे हुए जिन्दा निकाले गए, जब उससे पूछा कि इस नन्हें शिशु को तुमने जिन्दा कैसे रखा तो उसने अपनी कटी हुई ऊंगलियां दिखाई कि इनसे खून निकाल कर इस बच्चे के मुंह में देती रही, ऐसी महान सेाच एक मां की ही हो सकती है।

मेरे पिता जी पढ़े लिखे नहीं थे, मेरे दादा जी चाहते थे कि मुझे पढ़ाई से हटाकर खेती के काम में लगाया जाए। परन्तु पिता जी को पढ़ाई की कदर थी। उन्होंने मुझे पढ़ने से नहीं हटाया। पिता जी मेरी विद्या के दानी हैं। यह उनका दान वा उपकार महान है।

मेरे पिता जी ने मेरे सामने, अपने पिता जी, अपनी सास और गरीबों की सेवा की है। सेवा के रिकार्ड कायम किए है। ऐसा ऋषि मैंने कहीं नहीं देखा। उनके हृदय की सुन्दरता की महक ही निराली है।

मेरे पिता जी ने मेरे भाई के ईलाज के लिए डाक्टरों के खेतों में हल चलाए हैं। पानी के सैलाबों में से गुजरकर, अपनी जान जोख़ों में डालकर उन्होंने काम किया। बहुत प्रसिद्ध डाक्टर कर्म सिंह जी के घर में नौकरों की तरह काम किया है। मां ने बेटे के सिर में कीड़े पड़ जाने पर रेगिस्तान में से गुजर कर कैसे ईलाज करवाया।

पिता जी खेत में सारा दिन काम करके लौटे तो देखा कि बड़ा भाई साधुओं के लिए पानी ले जा रहा है, उन्होंने उससे घड़ा ले लिया और सिर पर रखकर मील या दो मील पानी छोड़कर आए। ऐसा कई दिन करते रहे।

"I have discovered my Father, my Mother in my Guru's Unique light"

पिता जी को थरैशर पर काम करते देखा है। उस समय पिता जी की ऊंगलियों मे खून आते देखा है। ऐसी पवित्र कमाई को मैं शराब, मास, सिनेमा ओर बुरे कामों में बर्बाद किया है। ऐसे उच्च भावों का मुझे सत्गुरू से दान मिला है। यह दान आप सबको मिल सके। आप यहां से धन्य धन्य होकर जाओ।

बदकिस्मती से कुछ समय मुझे इस दर से दूर रहने का मौका मिला। मेरी आत्मिक मौत होने लगी। मेरी चिन्ताएं, मेरी क्रियाएं, बोली सब कुछ खराब होने लगा। बहुत दुखी रहा, रातें जागकर काटी, आख़िर गुरू के ज्ञान ने मुझे बचा लिया।

श्रीमान कुलदीप सिंह जी :- इस दर पर आकर बेहद खुशी मिली है। एक महान खजाना था, जो छिन गया था, वह खुशकिस्मती से फिर मिल गया है। धरती पर सूरज के छिप जाने से अन्धेरा हो जाता है। गुरू के दर से परे होने पर हृदय के भीतर गहरा अन्धेरा हो जाता है। मनुष्य भटकने लग जाता है।

जब भजन गाया जा रहा था तो माता पिता दिखाई दे रहे थे। मुझे ऐसे पिता का पुत्र होने का फख़र है। हम दो भाईयों ने शराब तक को छुआ नहीं, कितना बड़ा सौभाग्य! हमारे घर में समाज आ गई, तभी हम बच सके। गुरू महाराज का रूहानी सूरज रूप नज़र आता रहा। इसी कारण हम तुच्छ लोग भी आम लोगों से अलग जीवन जी रहे हैं। मेरे घर के पास ही ताश खेलने का अड्डा है। मैं इस भयानक लत से बचा हुआ हूं। अपने आपको स्वर्ग में बैठा महसूस करता हूं।

मुझे दुख हो रहा है कि मैं अपने पिता को बहुत तंग करता रहा हूं। मैं उनसे उनकी पहुंच से अधिक मांग करके उनको दुखी किया है।

उस समय मेरे पिता जी को एक तरफ से 20 रु० माहवार और दूसरी तरफ से 6रु० महावार मिलते थे। फिर स्कूल में जाकर पढ़ाते थे। फिर घर आटा चक्की वा कारखाने में काम करते थे। ऐसा कुछ करते आख़िर उनकी सेहत खराब हो गई।

मैं पिता जी से कभी साईकल और कभी मोटर साईकल की मांग करता था। मैंने उनको बहुत सख़्त और खराब शब्द बोले। वह सुनकर उठकर बाहर चले जाते। दिवार पर सिर मार मार कर कहते, धर्मवीर जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी मुझे, अपने पास बुला लो। ग़ल्त काम करने के पलैन बनाता था। पिता जी ने अपनी पुरखों की जायदाद बिल्कुल नहीं बेची। हमारे लिए फिक़र किया। सभाओं में आकर मुझे अपने अपराध नज़र आ रहे हैं। (मन भर भर कर आ रहा था) इन सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। उनका सारा ब्यान बहुत हृदय स्पर्षिय था। हृदयों पर प्रभाव डाल रहा था और गुरू के चरणों में झुका रहा था।

श्रीमान जागीर सिंह जी (केसूपुरा) मैं पापी, शराबी कबाबी निर्लज, पशु काटने वाला, छोटे होते मां से रूठ कर उसको तंग किया, एक पशु के ज़ोर से फावड़ा मारा, मां बाप को इससे बहुत दुख हुआ, वह नाराज़ हुए मैं घर से निकल गया। मां बाप को बहुत दुखी किया। गुरू ने इस पापी वजूद को बचा लिया। सभापति जी को छुरा मारने को फिरता था। सत्गुरू ने ऐसे वजूद से पिता की सेवा करवा दी। पिता जी के चले जाने से बहुत ही दुख हुआ।

मेरे पिता बहुत सुन्दर थे, पवित्र थे, न्याय का भाव रखते थे। भाई बहनों के प्रति प्यार था। वह अपने पिता का कहना मानते थे। किसी में थोड़ा भी भेद भाव नहीं रखते थे। उन्होंने दादा जी

की बहुत सेवा की। मेरे दादा जी भी महान हस्ती थे। पशुओं की बहुत सेवा करते थे। एक गरीब आदमी की सेवा करते करते परलोक चले गए। दादा जी के परलोक गमन पर लोगों ने बहुत शोक मनाया।

मेरे पिता जी मुझे पढ़ाना चाहते थे, परन्तु मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन करता रहा। (बहुत रो रोकर) पिता जी ने अपने भाईयों की भी बहुत सेवा की है। बहुत ही नेक इन्सान थे।

व्यापारी से सौदा किया, उसके बाद भाव बहुत बढ़ गए, परन्तु वह मुकरे नहीं। ईमानदारी थी। पानी लगाने में ईमानदार थे। किसी के खेत से गन्ना तक नहीं लेते थे।

इस सत्य धर्म में आकर सच्चे धर्म का ज्ञान मिला है। मेरे माता जी भी बहुत भले घराने से आई है। उन्होने पिता जी की बहुत सेवा की है। उनके भीतर हमदर्दी का भाव है। उससे भरकर वह सेवा करती थी। उन्होंने हमारी नानी जी की भी बहुत सेवा की है। अपनी मां के पास डेरा लगा लिया। अपना घर भूल गई।

मुझे खुशी है कि मेरी पत्नी और मेरी भावजा मेरी माता जी की बहुत सेवा करती हैं। घर में स्वर्ग है।

एक बार सरपंच का चुनाव होना था। एक तरफ मेरे मामा खडे थे, दूसरी तरफ मेरे चाचा। मैं बार बार पुकारता था कि मामा को हराकर छोड़ूंगा, इससे मां को बहुत दुख पहुंचता था। मां ने बहुत सदमा खाया। मेरे भाई वा दूसरे लोगों ने हस्पताल ले जाकर बड़ी मुश्किल से उन्हें बचाया। अब मुझे पापी को बार बार मां के उपकार नज़र आ रहे हैं। व्याकुल हो होकर मां की लम्बी उमर की कामना करता हूं। ताकि मैं ज़्यादा से ज़्यादा सेवा कर सकूं। मां को आख़िर अधरंग हो गया। मुश्किल से मौत से बचीं। फरिश्तों की तरह जीत सिंह जी और सुखदेव सिंह जी दोनों भाई आ गए। जीत सिंह जी ने रातें जाग जागकर सेवा की। पत्नी ने बच्चों को भुलाकर माता की सेवा की। पिता जी के परलोक चले जाने पर घर बिल्कुल सूना हो गया। माता जी के बचने से बहुत राहत मिली। मां के हमारे बच्चों पर भी बहुत बड़े उपकार हैं। बार बार सुबह शाम प्रणाम करता हूं। कुछ सेवा करने का सौभाग्य मिलता है। उनका ब्यान बहुत भाव पूर्ण था, जो हृदयों को छू रहा था।

श्रीमान जगदीष प्रसाद जी (चण्डीगढ़) जिस प्रकार तारों की गिणती नहीं हो सकती, बालों की गिणती नहीं हो सकती, उसी प्रकार बाप के उपकारों की गिणती सम्भव नहीं।

जब मैं किसी अपंग को देखता हूं, तो माता पिता के उपकार नज़र आते हैं। वह हमें नेसती से हस्ती में लेकर आए। शोक! मैंने माता पिता का दान सार्थक नहीं किया। 32 वर्ष की उमर तक माता पिता को सताया ही सताया है। शराब, मास, जुआ, बदचलनी, किसी में कसर नहीं छोड़ी। बहुत सताया, बुरी तरह सताया।

मैं विधवा मां को सताया है, रूलाया है। अपने नीच जीवन कारण बेबस हो गया था। मैं लाचार था। चारों भाई पापों में डूबे हुए थे। मां ने समाज से जोड़कर दूसरा जन्म दिया है। बहुत शोक! कि मैंने समाज को पाने के सौभाग्य को भी सार्थक नहीं किया। मैं पूरी कोशिश करूंगा कि अपने जीवन को भगवान के मिशन में लगाकर सफल कर सकूं।

श्रीमान तेजराम जी शर्मा (गुजरात):- मैं देव समाज का बेहद उपकृत वजूद हूं। मेरे पास न भाव हैं और न ही शब्द हैं कि मैं पू० भगवान को दण्डवत प्रणाम कर सकूं। इस

गांव में गुरू महाराज की रोशनी वा शक्ति के महान प्रभाव काम कर रहे हैं। उन सब को प्रणाम करता हूं, जिन्होंने इस प्रथा को चलाया वा जारी रखा, उनका धन्यवादी हूं। केसूपुरा मल्लेका वा अन्य स्थानों से 100 के करीब आए जनों को भी धन्यवाद करता हूं। श्रीमान जी ने तन, धन, मन से संग्राम किया है और कर रहें है। उनका ध न्यवाद कर नहीं सकता। मेरा हृदय इस कारज को देखकर बार बार झुक रहा है। गुरू महाराज ने मेरी बहुत रक्षा की है। मुझे माता पिता का ऐसा रूप दिखाया और सेवाकारी बनाया। इस कारण आज मुझे पछताना नहीं पड़ रहा। मेरा बेटा मुझे यह भिक्षा दे दे कि वह समाज से जुड़ जावे। मेरा पोता भी समाज से जुड़कर आगे बढ़े।

श्रीमान अनोख कुमार जी (नये नौजवान) पहले मैंने मां बाप को कभी प्रणाम नहीं किया पर अब प्रतिदिन प्रणाम करूंगा।

काफी समय हो गया था, इसके बाद जो जो माता पिता हाज़िर थे, सन्तान ने उनके गले में फूलों के हार डालकर उनके चरणों में प्रणाम किया। यह एक स्वर्गिय दृष्य था। बहुत जनों की आखें आंसुओं से तर थी।

उसके बाद लंगर के लिए 9000 के लगभग दान दिया। मल्लेका मन्दिर के लिए भी कुछ दान मिला। कुछ नये मासिक पत्र जारी हुए। चन्दा अखबार भी मिला, कुछ जनों ने पाप छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

सत्संग के प्रभावों से हाजरीन धन्य धन्य हो रही थी। हृदय पाक खुशी से भर रहे थे और गुरू महाराज के आगे झुक रहे थे।

फिर सभापति जी ने गुरू महाराज वा सहायकारी शक्तियों को धन्यवाद दिया। बाहर से आए जनों का भी धन्यवाद किया। जय ध्वनि के साथ यह प्रोग्राम समाप्त हुआ।

इसके बाद प्रीति भोज हुआ, जिसमें हलवा भी दिया गया, फिर अपनी अपनी कारों, वैनों वा मोटर साईकलों पर यह काफ़िला रवाना हुआ।

श्रीमान बलदेव सिंह जी चार धर्म सम्बन्धियों को साथ लेकर वापिस चण्डीगढ़ पहुंच गए।

(एक हाजरीन)

मुबारक है सब भारत वास्यिों को कि 28 वर्ष बाद फिर क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड कप जीत कर इतिहास रच दिया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts